DM
DARKMAGIC
COMICS

#-3

# जादूगर चिंटू

## भाग एक--भूकंप का सबक

आइए आपका स्वागत है उस जादुई दुनिया में जिसका नाम है... मंतरा।

वह मंतरा, जहाँ के ज्यादातर कार्यों में जादू का सहारा लिया जाता है।

जादू..जहाँ हर कार्य को आसानी से पूरा कर सकती है ...


स्टोरी-: अरविंद कुमार यादव
एडिटिंग-: ऋषभ राज
आर्ट-: सूरज मालवीय
कवर-: अमृत पासंग लामा
कलर-: संजय यादव(संजु)
कैलीग्राफी-: संजय यादव(संजु)


डार्क मैजिक टीम पेश करती है...

# जादूगर चिंटू

## भुल्लन को सबक

...वही इसके खतरनाक दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं।

चट्

ओए ये क्या हो गया बूहूहू।

अरे ये क्या किया नासपिटे ! कहा था बच्चों द्वारा जादू का इस्तेमाल करना सख्त मना है।

कल ही तुझे गुरुकुल में छोड़ के आती हूँ।

इसीलिए इन सबसे यहाँ के बच्चों को दूर ही रखा जाता है।

तब तक, जब तक उनकी गुरुकुल की शिक्षा पूरी नहीं हो जाती।

तो आइए चलते हैं ऋषि कुछनाआताचार्य के आश्रम, जहाँ पर जादुई दुनियाँ के कई राज्य के बच्चे शिक्षा लेने आते हैं।

इन्होंने जादुई लोक के बच्चों को बर्बाद करने मेरा मतलब शिक्षा देने का दायित्व (ठेका) जो ले रखा है (हीहीही)।

तो आइये देखते हैं यहाँ हमारे प्यारे (एक नम्बर के लुच्चे) चिंटू अब क्या गुल खिला रहे हैं।

तू कौन कहाँ से sss आई है, ये हुश्न कहाँ से sss लाई है।

हाय मेरी कम्मो... मेरा दिल ले गई ओ कम्मो किधर। हीहीही

ये हैं 'छू मंतर' राज्य के दुलारे (सिरदर्द..आफत) छोटे जादूगर और यहाँ के सर्वअप्रिय राजकुमार..चंटेश्वर प्रताप उर्फ चिंटू।

अरे मोरे सैंया छोड़ो (पकड़ो) मोरी बईयां हीहीही।

अरे यार यहाँ तुझे तेरी धन्नो तो मिल गई लेकिन मेरा क्या ??

कहाँ है मेरी राजकुमारी शोभिता ?

चिंटू ! वो देख आ रही है तेरी प्रेम प्यारी, तेरी छम्मकछल्लो।

हाँ बस कर यार लेकिन उसके पीछे कौन लार टपकाता आ रहा है ?

राजकुमारी भी अपनी सखियों चट्टो और खट्टो के साथ हरियाली का आनंद लेने वहीं आ रही थी।

काँव काँव

चीं चीं

कितना आनंदमय दिवस है आज ? है ना सखियों ??

हाँ बस इस मजेदार मौसम में मूली के साथ करेले की चटनी मिल जाती तो मजा ही आ जाता (चट्ट चट्ट)।

हाँ पर मूली के साथ खट्टा मिल जाये तो और भी ज्यादा मजा आये हीहीही।

चुप करो दोनो !
जब देखो यही खाने की बात ,
सुना है राजकुमार चिंटू भी शिक्षा ग्रहण करने इसी आश्रम में आये हैं।

मेरी आँखें उन्हीं को ढूँढ रहीं हैं। यही-कही होंगे।

देख रे फुल्लन... वह रही तेरी वो...

क्या उफ्ताद ??

अबे वो जो भईया की होती है ना??

बहना ??

गुर्र... अबे जिससे विवाह होता है।

कन्या ??

अबे अक्ल के अंधे ...जो शादी के बाद बनती है।

ओह हाँ अब मत बताना... फमझ गया... वो होती है... वो होती है...ओ तेरी, क्या होती है ?

अबे छोड़ तेरे बस का नही है। अब देख मेरा कमाल।

**नोट -:** फुल्लन फ को फ बोलता है, मेरा मतलब स को फ बोलता है हीहीही।

चल रे ..
आया बड़ा अरमान
खान,हुंह।

हे लाल दुपट्टे
वाली तेरा नाम तो बता
(लेकिन दुपट्टा तो है ही नहीं..
क्या फर्क पड़ता है)
हीहीही।

ओए दुपट्टे
के बच्चे ! तुम लोग हमारा
पीछा क्यो कर रहे हो ?

चलो
राजकुमारी, इन छिछोरों के मुँह
मत लगो।

इधर भुल्लन की छिछोरी हरकत से राजकुमार चिंटू का पारा चढ़ने लगा।

आगे से ऐसी
हरकत की तो मुँह तोड़
के हाथ मे दे दूंगी।

उफ्ताद, भाभी
तो नाराज हो गई
हीहीही।

अच्छा ?

ये मोटा मेरी राजकुमारी
को छेड़ रहा है, इसकी इतनी हिम्मत??
अभी मजा चखाता हूँ गुर्र।

आबरा
का डाबरा गिली
-गिली पू !

हाय...ये क्या !
उसे कुछ हुआ ही नहीं
कमबख्त।

अरे चिंटू... भूल गया क्या तेरी माता श्री ने तेरी शरारतों से तंग आकर राजगुरु उपायाचार्य से उपाय पूछ के तेरी शक्तियां कुछ समय के लिये छीन ली हैं और तेरे साथ रहने की वजह से हमारी भी शक्तियाँ छीन ली गई हमसे।

अरे मूर्खों वह बात तो हमें बस डराने के लिये कही गई थी बस। यहाँ आश्रम में किसी शिष्य की कोई शक्तियाँ काम नहीं करती समझें ?

आखिर उसके आइटम मेरा मतलब उसकी प्रेमिका पर पंक्तियों(लाइनों) की बौछार जो की जा रही थी हीहीही।

शक्तियाँ काम भले ही ना करें पर चिंटू नें तो उसे सबक सिखाने की ठान ली थी।

चिंटू के दिमाग में एक नई खुराफात जन्म ले रही थी।

तो तैयार हो दोस्तों...? आओ करते हैं मिलके इस मोटे का उईया-पुईया।

हाँ मजा आयेगा। इस छेड़ूलाल को भेड़ूलाल बनाना ही पड़ेगा।

अगले दिन।

चले जाओ यहाँ से। मैनें पुदीने की चटनी क्या माँग ली, ये क्या ले आये हो हुंह ?

अरे मेरी बिल्लो, मैं यह कीमती पत्थर वाली कटोरी खास तुम्हारे लिये माँग कर मेरा मतलब खरीद के लाया हूँ हीहीही बूहूहू।

उफ्ताद, ये आवाज कैफी ?

रुक सुनते है।

खनाक

हाय ये क्या किया बूहूहू

चले जाओ यहाँ से गुर

ओए, ये तो पिल्लू और टुच्ची की आवाज है।

इधर भुल्लन के दिमाग में कोई नई खुरापफात जन्म ले रही थी। था तो आखिर ठरकी ही।

सुन फुल्लन...

हाँ गुरु।

लगता है पिल्लू और टुच्ची में कुछ अनबन हो गई है। अब मैं टुच्ची को उस मनहूस पिल्लू से छीन कर अपनी दिल की रानी बनाऊँगा समझा ??

हाँ गुरु फमझा... लेकिन आप उफे पटाओगे कैफे? आप जैफे भैंफे फे पटेगी मेरा मतलब आपफे पटेगी वो ?

अबे चुप कर, मैं उसे अपने मस्तिष्क का प्रयोग कर अपने प्रेम के उसमे फसाउँगा...

किफमें गुरु ?

अरे जिसमे मछली को फँसाया जाता है ??

काटे में ?

अबे मूर्खो के वो ??

क्या गुरु ?

अबे मछली वाला बता।

दाँत... उसे दाँत में फँकाया जाता है।

अरे मनहूस।

हाँ हाँ, याद आया। मछली को फँकाया जाता है..ऊ ...क्या गुरु आप ही बताइये (बूहूहू)।

अरे चल छोड़ रे मन्दबुद्धि.।

पिल्लू गुस्से में थूथन पिचकाता हुआ बाहर निकल गया।

बड़ी आई पुदीने की चटनी चाटने वाली, हुंह। अब कटोरा ही नही है तो चाटोगी कहाँ से ?

हाँ..हाँ जाओ, अब तुम्हारी शक्ल ही नहीं देखनी मुझे।

क्या हुआ प्रिय टुच्ची ?

कौन है बे ?

भुल्लन...टुच्ची के नजदीक आया और बोला।

सुना है तुमने पिल्लू से झगड़ा कर लिया और खाने की कटोरी भी तोड़ दी ?

सुना क्या कमीने तू तो ताड़ में ही बैठा था और मन ही मन लड्डू भी फूट रहे हैं अंदर।

क्या...? तुम्हें कैसे पता ??

?

ही ही ही, प्रेमियों को पता लग ही जाता है प्रिये।

अच्छा ???

और नही तो क्या ? एक वो पिल्लू है जो तुम्हारी जरा भी परवाह नहीं करता और दूसरा..हीहीही

दूसरा??

मैं...हीहीही

तुम ?

और नहीं
तो क्या ? मैं तन्ने बहुत प्रेम
करुँ छू हीहीही।

अगर हाँ बोल दो
तो मैं तुम्हे अपनी वो
बना के रखूँगा...

क्या
बना के ?

अरे वो जो
राजा की होती
है ना !

क्या
होती है ??

अरे वो होती
है ना जो राजा के साथ
हमेशा रहती है।

फुल्लन बता
ना बेSS

हाँ गुरु फमझ
गया। जो राजा के फाथ रहती है
वो है..अरे क्या है गुरु ?

अबे कमअक्ल !
वो राजकुमारी की
अम्मा...

..मेरा मतलब
माताश्री हैं वो क्या
हैं ?

वो तो औरत हैं।
अगर आदमी होती तो
पिताफ्री नहीं होती ?

आप भी ना गुरु
कैफी-कैफी बाते करने
लगते हो कभी-कभी
हीहीही।

अरे बेवकूफ,
हर बार बेइज्जती
करवाता है गुर

अरे रुको
तो, पहले ये बताओ
कि ये पिताफ्री क्या
होता है ?

दरअफल बात यह है टुच्ची (एक नम्बर की लुच्ची गुर्र)जी कि मैं **फ** को **फ** बोलता हूँ। इसीलिए आप को उच्चारण गलत सुनाई दे रहा है।

ओए गधे..! तो हम भी **फ** को **फ** ही बोलते हैं'ख' नहीं बोलते।

अरे आप बात को फमझ नहीं रही हैं,.. मैं **फ** को **फ** बोलता हूँ।

अरे नासपीटे ! तू मेरी बात को समझ नहीं रहा...हम भी **फ** को **फ** ही बोलते हैं।

अबे टुच्ची की बच्ची मैं ये कह रहा हूँ कि..

अबे फुल्लन के गुल्लन कहीं के मैं भी तो वही बोल रही हूँ।

टुच्ची की गुच्ची मैं भी कब फे बोल रहा हूँ।

कचर पचर कचर पचर

अरे चुप करो !! एकदम चुप। अब मैं बोलूँगा और दोनों सुनोगे मेरी बात।

यह फुल्लन **स** को **फ** बोलता है समझी ?

ओह ये बात...तो पहले क्यूँ नहीं बताया ?

अरे मैं इफे कब फे बताने की कोफिफ कर रहा हूँ लेकिन..

चुप ! अब बस कर। अब काम की बात, मेरा मतलब अब बात करते हैं।

हाँ तो मेरी प्रिय टुच्ची... हीहीही

क्या कहा ?

मेरा मतलब क्या हुआ, इतनी गुस्साई हुई और परेशान क्यों हो ?

हाय मैं क्या करुँ उस मुये पिल्लू की वजह से गुस्से में मैंने अपना कटोरा तोड़ दिया। और तुम तो जानते ही हो कि आश्रम के खानपान अध्यक्ष भुक्खड़चंद भिखारीलाल कितने बड़े भिखारी, मेरा मतलब सख्त हैं। उन्हें इस बारे में पता चला तो गजब हो जाएगा बूहूहू।

अरे मेरे रहते हुए ऐसा होने दूँगा क्या ?

और फिर ...

भुल्लन...फुल्लन की तरफ रुख करते हुए बोला..

जा बे फुल्लन मेरा वाला लेके आ

अभी लाया उफ्ताद।

आश्रम की एक जगह जहाँ भुक्खड़ों के भुक्खड़ महाभुक्खड़...

...भुक्खड़चंद का राज चलता है।

कितने आदमी थे..?? मेरा मतलब खाने का कटोरा कहाँ है तुम्हारा गुर्र...?

वह..वह तो खो गया बूहूहू(मारे गये यार इसका तो मुझे ध्यान ही नहीं था।)

इतनी मेहनत से (चक्कर चला के) एक-एक कटोरा जोड़ा है मैने और तुमने एक झटके में खो दिया ??

सजा मिलेगी... बराबर मिलेगी।

कल से...

...पूरे 10 दिन तक...

...भुल्लन सबकी कटोरी...

...साफ करेगा और...

...गुरु कुछनाआताचार्य को खाना देगा।

नही..sss

अब आयेगा मजा। बहुत स्याना बन रिया था मोटा हीहीही।

अगले दिन

ओए ये स्वादिष्ट भोजन सामने देख के फिर से खाने का मन कर रहा है। खाऊं या ना खाऊं बूहूहू।

क्यूँ पिल्लू ! सुबह भुल्लन के खाने में रुक्खी वन से भुक्खी बूटी ला कर डाल दी थी ना ??

हाँ हाँ डाल दी थी और थोड़ा गोबर भी मिला दिया था हीहीही।

कोई देख नहीं रहा खा लेता हूँ थोड़ा। बहुत अच्छी खूशबू आ रही है (चबड़ चबड)।

तभी पीछे से भुक्खड़चंद आता है।

क्यों रे कालिया...मेरा मतलब भुल्लन, कितना समय हो गया ?

गुरुदेव को भोजन देने जाना है। कब से वे हाथ धो कर लार टपकाते हुए बैठे हैं,हीहीही गुर्र।

अं.. जा ही रहा हूँ (हिच्च) !

(हिच्च),ये देखो किस तरह बैठे हुए हैं। मेरी तो किसी को परवाह ही नहीं (गुर्र)।

कहाँ रह (मर) गय थे वत्स(झापड़ी के)? कब से ध्यान लगाये(भूख के मारे मर रहे)हैं हम ?

तभी भुल्लन को आई एक जबरदस्त हिचकी...

हिच्च

हिच्च

हिच्च

...और थाली में रखा सारा भोजन उसनें...

...ऋषि पर उड़ेल दिया।

हाय दईया.. मोरी मईया.. हम पर ये किसने हरा रंग,मेरा मतलब पीला रंग डालाऽऽ...

...इस मोटे की गलती ने हमें.. मार डाला.. हाय बूहूहू गुर्र

मर गया बूहूहू(हिच्च)।

और भुल्लन की हिचकी ने उसे मार डाला हीहीही।

अब आयेगा मजा। अब देखना इस भुल्लन का ठुल्लन कैसे बनता है हीहीही।

आज से इसकी सारी लुच्चा गिरी छूट जायेगी हीहीही।

चिंटू और पिल्लू खुशी से फूल कर कुप्पा हो रहे थे

और इधर ऋषि कुछनाआताचार्य को आ रहा था गुस्सा।

अरे दुष्ट ! मेरे सारे अरमानों पर जल,मेरा मतलब भोजन फेर दिया गुर्र। मैं तुझे शाप देता हूँ कि..

नहीं नहीं ! गुरुदेव(हिच्च),मेरी कोई गलती नहीं (हिच्च)।

आंय ! हिचकी?? यानी तूने मेरा भोजन पहले ही ठूँस लिया था बे मोटे...(गुर्र)।

म..म..मुझे क्षमा कर दीजिए गुरुदेव , मैंने जान बूझ कर यह सब नहीं किया। पता नहीं कैसे वो..

चुप हो जा दुष्ट ! पहले ये हिचकी बंद कर अपनी। नहीं तो आता माझी सटकली गुर्र।

क्षमा कर दो(हिच्च) गुरु। अब ऐसा (हिच्च) नहीं होगा बूहूहू।

अबे कोई इस मोटे की हिचकी बंद करवाओ।

इसे कैसे बताऊँ कि हिचकी से मुझे मेरी पत्नी 'हिचकी लगी'की याद आ जाती है जो ऊपर...

...वाले के पास ढुड़क ली। मुझसे घर का समस्त कार्य करवाती थी कमबख्त।

हीहीही मेरा मतलब बूहूहू (हिच्च)

अबे कोई बंद करवाओ रे इसका बाजा।

चिंटू भला यह अवसर कहाँ हाथ से जाने देने वाला था।

अरे गुरुदेव हम हैं ना ! हम दूर कराते हैं इसकी हिचकी, क्यों पिल्लू ??

हाँ हाँ क्यों नहीं(अब बनाते हैं मोटे का पुलाव हीहीही)

आप चिंता ना करें गुरुवर, हमारे पास इसकी हिचकी का जबरदस्त इलाज है।

ले जाओ इसे और जब तक इसकी हिचकी बंद ना हो जाए इसे मेरे सामने मत लाना और बंद होने के बाद लईयो जरुर (गुर्र)।

क्यों बे मोटे ? मेरी छम्मक छल्लो को पँक्ति मारेगा ??

ओए छोड़ दो मुझे (हिच्च)।

हमसे लेगा पंगा तो कर देंगे नंगा , हीहीही

मेरी तरफ से भी। मेरी टुच्ची मेरी फूलगोभी को पटायेगा।

देख लूँगा (हिच्च)।

समाप्त

# ब्लैक बोर्ड-3

नमस्कार बंधुओं,

तो कैसा लगा आप सब को यह अंक ? आशा है आपने जादूगर चिंटू और आश्रम में होने वाली शरारतों का लुत्फ उठाया होगा। हर नई कॉमिक्स के साथ आप नए चरित्रों से रुबरु हो रहें हैं। अगले अंको में इन पात्रों की कहानियां आगे बढ़ाई जाएगी और साथ ही कुछ नए और मजेदार पात्रों को भी जोड़ा जाएगा। सबसे अहम बात यह है कि उन पात्रों को दर्शाने के लिए की गई चित्रकला का अंदाज भिन्न होनें वाला है। हमने कुछ कॉमिक्स में 'जैपनीज मांगा' स्टाइल को भारतीय तरीके से बनाने की कोशिश की है। उम्मीद है आपका स्वाद बिगड़ेगा नहीं पर बदलेगा जरुर ।

मित्रों,इस समय दुनिया वैश्विक महामारी से जूझ रही है जिसका नाम है ' कोविड-19' और इससे निपटने के लिए दुनिया की कुल आबादी का आधा हिस्सा अपनी घरों में कैद है। यही होना भी चाहिए। आम जनता को अपने सुपरहीरोज की तरह ही यह मौका मिला है कि वे 'कोविड-19' जैसे विलेन से आमने-सामने की लड़ाई लड़े। इस लड़ाई को जीतने के लिए सबसे अच्छा हथियार है अपनी एकता बरकरार रखते हुए सामाजिक दूरी बनाना और भारत के लोग इसमें काफी हद तक सफल भी हो रहे हैं।

चूंकि हमारी कॉमिक्स सॉफ्ट कॉपी में उपलब्ध होती है तो यह बेरोकटोक आप तक पहुँच गई और लॉकडाउन के आपके बोरियत भरे क्षणों को खुशगवार बनाया। अगला अंक आपके हाथों में जल्द ही होगा। जो वादा किया वो निभाना तो पड़ेगा। अपन ख्याल रखियेगा।

शीघ्र मिलते हैं अगले अंक में।

धन्यवाद।

टीम डार्क मैजिक कॉमिक्स

अंतरिक्ष से बढ़ चली है एक भीषण आपदा पृथ्वी की ओर...

क्या इरा बचा पाएगी अपने लोगों को इस भयानक आपदा से ?

या फिर ये आपदा तहस-नहस कर देगी पूरी पृथ्वी को...

जानने के लिए पढ़िए डार्क मैजिक कॉमिक्स की अगली धुंआधार पेशकश...

# इरा के कारनामें

## भाग दो—: अंतरिक्ष का हमला

जल्द आ रहा है...

# सुरक्षा सेना